शास्त्र में ऐसा क्यों लगता है कि पौलुस की दमिश्क की राह
में यीशु से भेंट के बारे में विरोधाभास है?

प्रश्न:

शलोम, परमेश्वर के सेवक! कृपया मेरी मदद करें। प्रेरितों के काम में तीन अलग-अलग स्थान—प्रेरितों के काम 9:3–7, 22:6–9, और 26:12–14—पौलुस की दमिश्क की राह में यीशु से भेंट का वर्णन करते हैं। लेकिन जब मैं इन्हें पढ़ता हूँ, तो ऐसा लगता है कि ये अलग-अलग बातें कह रहे हैं, खासकर इस बारे में कि क्या पौलुस के साथ यात्रा करने वाले लोगों ने आवाज़ सुनी या नहीं। यह कैसे संभव है?

उत्तर:
यह बहुत ही महत्वपूर्ण और समझने योग्य प्रश्न है। पहली नजर में ये कथन विरोधाभासी लग सकते हैं, लेकिन जब हम गहराई में देखें तो पाएंगे कि ये वास्तव में एक-दूसरे के पूरक हैं, विरोधी नहीं।

1. विरोधाभास क्यों लगता है?

मुख्य भ्रम इन दो श्लोकों से उत्पन्न होता है:

प्रेरितों के काम 9:7
“और जो लोग उसके साथ यात्रा कर रहे थे, वे खड़े होकर मौन रह
गए; उन्होंने आवाज़ सुनी, पर किसी को नहीं देखा।”

शास्त्र में ऐसा क्यों लगता है कि पौलुस की दमिश्क की राह
में यीशु से भेंट के बारे में विरोधाभास है?

प्रेरितों के काम 22:9
“और जो मेरे साथ थे, उन्होंने प्रकाश देखा और डर गए; पर जो
मुझसे बोला, उसकी आवाज़ उन्होंने नहीं सुनी।”

एक श्लोक कहता है कि उन्होंने आवाज़ सुनी, और दूसरा कहता है कि उन्होंने नहीं सुनी। तो असल में क्या हुआ?

2. सुनना बनाम समझना

समाधान यह समझने में है कि शास्त्र “सुनना” शब्द का उपयोग कैसे करता है। ग्रीक शब्द akouō (ἀκούω) संदर्भ के अनुसार ध्वनि सुनना या बोले गए शब्द को समझना हो सकता है।

प्रेरितों के काम 9:7 – लोगों ने ध्वनि सुनी, यानी वे जानते थे कि कुछ अलौकिक हो रहा है।
प्रेरितों के काम 22:9 – पौलुस स्पष्ट करता है कि उन्होंने उस आवाज़ को समझा नहीं जो उससे बोल रही थी।

इसलिए अंतर है सिर्फ सुनना और समझना में।

शास्त्र में ऐसा क्यों लगता है कि पौलुस की दमिश्क की राह
में यीशु से भेंट के बारे में विरोधाभास है?

3. परमेश्वर की आवाज़ और गरज का उदाहरण

पौलुस के अनुभव की तुलना यूहन्ना 12:28–30 से करें:

“तब स्वर्ग से एक आवाज़ आई: ‘मैंने अपने नाम को महिमावान किया है, और मैं फिर महिमावान करूँगा।’ जो लोग वहाँ खड़े थे और इसे सुना, उन्होंने कहा कि यह गरज की तरह था; कुछ ने कहा, ‘एक स्वर्गदूत ने उससे कहा।’ यीशु ने उत्तर दिया, ‘यह आवाज़ तुम्हारे लिए आई है, मेरे लिए नहीं।’”

यहाँ भी कुछ लोगों ने आवाज़ सुनी, कुछ ने केवल गरज की तरह अनुभव किया। सभी ने कुछ न कुछ सुना, लेकिन सभी ने अर्थ नहीं समझा।

पौलुस के साथियों के साथ भी यही हुआ – उन्होंने आवाज़ सुनी, पर शब्दों का अर्थ नहीं समझ पाए।

4. सुनने में समझ का महत्व

यीशु ने बार-बार कहा कि सच्चा सुनना केवल कानों से सुनना नहीं बल्कि समझने में होता है।

शास्त्र में ऐसा क्यों लगता है कि पौलुस की दमिश्क की राह
में यीशु से भेंट के बारे में विरोधाभास है?

मत्ती 11:15
“जो सुनने की शक्ति रखते हैं, वे सुनें।”

लूका 8:18
“इसलिए ध्यान से सुनो कि तुम क्या सुनते हो।”

ये श्लोक स्पष्ट करते हैं कि आध्यात्मिक सुनना केवल ध्वनि नहीं बल्कि परमेश्वर की सच्चाई को समझने और ग्रहण करने का काम है।

5. केवल पौलुस ने क्यों समझा?

प्रेरितों के काम 26:14 के अनुसार पौलुस ने यह आवाज़ हिब्रू भाषा में सुनी:

“और जब हम सभी ज़मीन पर गिर पड़े, तो मैंने हिब्रू भाषा में एक आवाज़ सुनी, जो मुझसे कह रही थी, ‘सौल, सौल! तू मुझे क्यों सताता है?’”

संभावना है कि अन्य लोग:

शास्त्र में ऐसा क्यों लगता है कि पौलुस की दमिश्क की राह
में यीशु से भेंट के बारे में विरोधाभास है?

ध्वनि तो सुने, पर
भाषा न समझ पाए, या
आध्यात्मिक रूप से संदेश को ग्रहण करने के लिए तैयार न थे।

यीशु सीधे पौलुस से बात कर रहे थे। अन्य लोग लक्षित श्रोता नहीं थे।

6. कोई विरोधाभास नहीं – बस अलग दृष्टिकोण

इसलिए कोई विरोधाभास नहीं है। यह एक ही चमत्कारी घटना के अलग दृष्टिकोण हैं।

7. अनुप्रयोग: सावधानी से सुनना

पौलुस ने तिमोथी से कहा:

1 तिमोथी 4:13
“जब तक मैं न आ जाऊँ, शास्त्र के सार्वजनिक पठन, उपदेश और शिक्षण में अपने आप को लगाओ।”

शास्त्र में ऐसा क्यों लगता है कि पौलुस की दमिश्क की राह में यीशु से भेंट के बारे में विरोधाभास है?

यह केवल पढ़ने की बात नहीं है। इसका मतलब है गहन, प्रार्थनापूर्ण अध्ययन, पवित्र आत्मा द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करना।

यीशु ने चेतावनी दी:

मत्ती 13:14–15
“वे सुनेंगे, पर समझेंगे नहीं; देखेंगे, पर न जानेंगे।
क्योंकि इस लोगों का मन सुन्न हो गया है… ताकि वे अपनी
आँखों से न देखें, अपने कानों से न सुनें, और अपने हृदय से न समझें, और मैं उन्हें न चंगा कर दूँ।”

निष्कर्ष

सौल के साथ दमिश्क की राह में यात्रा करने वाले लोगों ने अलौकिक ध्वनि सुनी, पर यीशु की बात को नहीं समझ पाए। केवल पौलुस, जो लक्षित श्रोता था, ने संदेश को समझा।

यह हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर को सुनना केवल कानों से सुनना नहीं, बल्कि खुले और तैयार हृदय से उसके वचन को ग्रहण करना है।

शास्त्र में ऐसा क्यों लगता है कि पौलुस की दमिश्क की राह
में यीशु से भेंट के बारे में विरोधाभास है?

“जो सुनने की शक्ति रखते हैं, वे सुनें।” (मत्ती 11:15)

परमेश्वर हमारी आध्यात्मिक कान खोलें ताकि हम उसकी आवाज़ को सच में सुनें और समझें।
आशीर्वाद प्राप्त करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp